Nanhaa Abaabali

528
96

समाज विकासमाला

नन्हा अबाबील

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ನಂ ೮ ೬೭ ೭೮ 1625

समाज-विकास-माला : ६०

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

नन्हा अबाबील

आस्कर वाइल्ड की दो शिक्षाप्रद कहानियां

ಗಾಂಧಿ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ
ಮೈಸೂರು
ನಂ. 528 96
ತತ್ವ ಪ್ರಚಾರ ಕೇಂದ್ರ

अनुवादक
श्रीकृष्ण

सम्पादक
यशपाल जैन

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9676
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सत्यपाल धवन,
दी सैंट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस,
दिल्ली

1625
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय, और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

इस पुस्तक में दो बड़ी ही मार्मिक कहानियां दी गई हैं। उन्हें पढ़कर ऐसा नहीं लगता कि उनके लेखक इस देश के नहीं हैं। कहानियों की आत्मा एक-दम भारतीय है। पहली कहानी में त्याग की महिमा दिखाई गई है, दूसरी में बच्चों की बड़े ही सरल ढंग से लेखक ने इन कहानियों द्वारा ऐसी शिक्षा दी है, जो दिल पर गहरा असर करती है।

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे इन कहानियों को अवश्य पढ़ें और अपने संगी-साथियों तथा कुटुम्बी जनों को भी सुनावें। अच्छी चीज़ का जितना प्रचार हो, उतना ही लाभदायक होता है। फिर ये कहानियां तो ऐसी हैं, जो हमेशा ताज़ी रहेंगी और लोगों के मर्म को छूती रहेंगी।

—सम्पादक

नन्हा अबाबील

: १ :

नन्हा अबाबील

एक नगर था। उसके बीचों-बीच एक ऊंचे स्तंभ पर सम्राट की मूर्ति खड़ी थी। उसकी सारी देह सोने के पत्तरों से मढ़ी थी। आंखों में दो चमचमाते हुए नीलम जड़े थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा लाल जगमगा रहा था। जो भी उसे देखता, देखता ही रह जाता।

कलाकार उसकी सराहना करते नहीं थकते थे। निराश मनुष्य उसे देखकर दिल को धीरज बंधाते थे और दुखिया माताएं उसकी ओर अंगुली से इशारा करके बच्चों को बहलाया करती थीं।

एक दिन रात के समय नगर के ऊपर से एक नन्हा अबाबील उड़ा। उसके सब संगी-साथी छः हफ्ते पहले मिस्र चले गये थे। अकेला वह एक सुंदर नरकट के प्रेम में फंसकर पीछे छूट गया था। नरकट से उसकी भेंट वसंत के शुरू में हुई थी। उस समय वह एक बड़े पीले पतंगे का पीछा कर रहा

था। नरकट की सुंदरता ने उसे मोह लिया। वह उससे दो बात करने का लोभ संवरण न कर सका और ठहर गया।

उसने नरकट से कहा, "तुम बड़ी सुंदर हो, क्या मैं तुमसे प्यार कर सकता हूं ?"

"जरूर कर सकते हो।" नरकट ने सिर झुकाकर कहा।

बस, फिर तो नन्हा अबाबील खुशी से झूम उठा। सारे दिन वह नरकट के चारों ओर मंडराता, बार-बार पंखों से नदी की धारा को छूता और उसमें छोटी-छोटी सुंदर लहरियां उपजाता रहा। गर्मियों भर उसका यही क्रम चला। लेकिन जैसे ही सर्दियां आईं, उसके सारे साथी अबाबील उसे अकेला छोड़ कर मिस्र चले गये। चार ही दिन में अबाबील को एकाकीपन खलने लगा। वह अपनी प्रेमिका के व्यवहार से ऊब उठा। वह ठहरा घुमक्कड़। वह चाहता था कि उसकी प्रेमिका भी उसीकी तरह घुमक्कड़ बने। पर उसके लिए ऐसा करना संभव न था। अबाबील ने उससे कहा कि चलो, कहीं सैर को चलें, पर उसने इन्कार कर दिया। बस फिर अबाबील एक क्षण के लिए भी वहां न टिक सका।

नरकट को छोड़ दिनभर वह आकाश में उड़ान

भरता रहा। पर जैसे ही अंधेरा हुआ, आकाश में तारे खिले, वह रात बिताने के लिए किसी अच्छे स्थान की खोज में नीचे नगर में उतरा। तभी एकाएक उसकी निगाह उस ऊंचे स्तंभ पर खड़ी मूर्ति पर पड़ी। अगले ही क्षण वह सुखी सम्राट के पैरों में जा बैठा।

इधर-उधर देखते हुए उसने मन-ही-मन कहा, "ओह, कितना सुंदर स्थान है यह! कैसी ताजी हवा है! रात मजे में गुजरेगी।" यह सोच वह सोने की तैयारी करने लगा। पर यह क्या? अपना सिर पंखों में छिपाया ही था कि एक बड़ी-सी बूंद तपाक से उसके ऊपर गिरी।

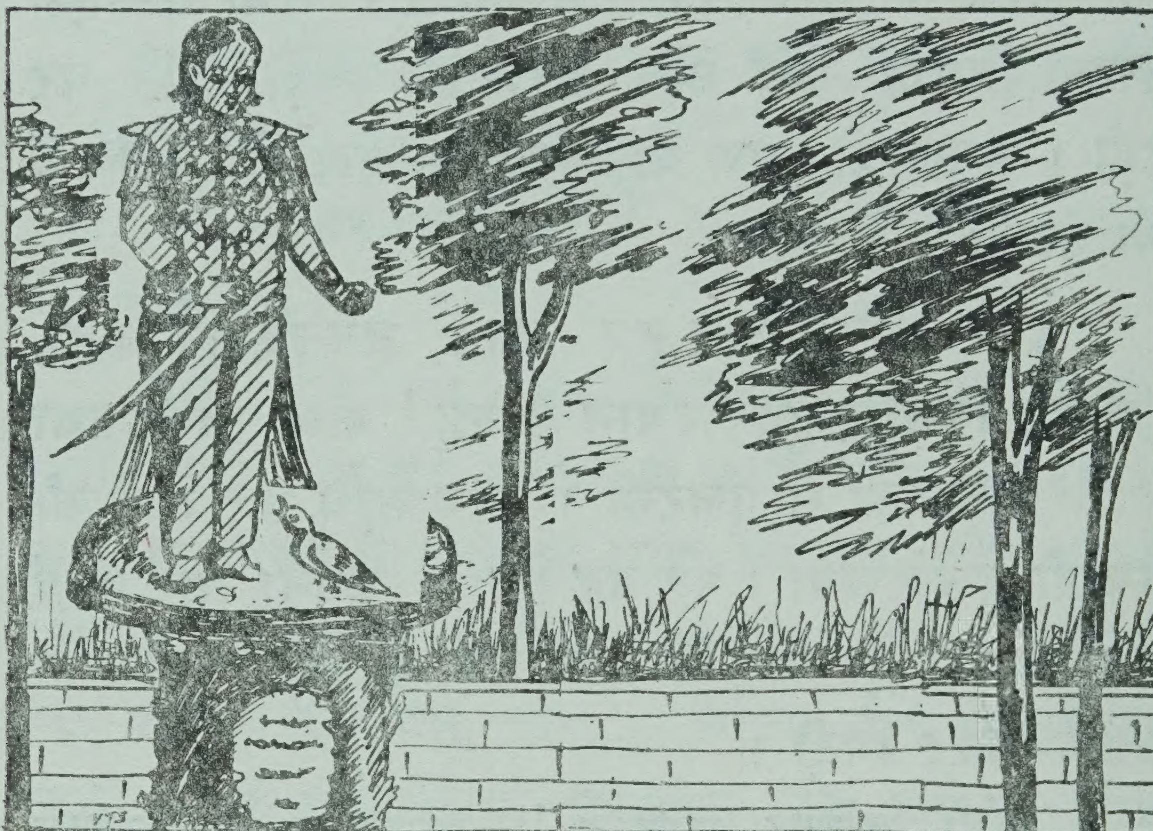
"बड़ी विचित्र बात है! आसमान में बादलों का नाम नहीं, तारे खिले हुए हैं, लेकिन फिर भी पानी!"

तभी एक बूंद और आकर गिरी।

"समझ में नहीं आता। इस मूर्ति का फिर फायदा क्या है कि जो यह एक बूंद पानी भी नहीं रोक सकती!" उसने मन-ही-मन कहा और किसी दूसरी जगह की तलाश में जाने का इरादा करने लगा।

उसने पंख खोले ही थे कि एक और बूंद आकर उसके ऊपर गिरी। इस बार अबाबील ने आंखें ऊपर

की ओर उठाईं तो वह चौंक पड़ा। उसने देखा—-सुखी सम्राट की आंखें आंसुओं से भरी थीं और उन्हींमें से



अबाबील सम्राट के पैरों में जा बैठा

बूंदें सुनहरे गालों पर से ढुलकती हुई उसके ऊपर गिरी थीं। अबाबील का जी दया से पसीज उठा।

"कौन हो तुम ?" उसने पूछा।

"सुखी सम्राट।" मूर्ति ने उत्तर दिया।

"सुखी सम्राट ! फिर रोते क्यों हो ?" अबाबील ने पूछा। "तुमने तो मुझे भिगो दिया।"

"क्यों रो रहा हूं ! नन्हे अबाबील, लम्बी कहानी है इसकी। अब तो मैं मर चुका हूं। परन्तु जब मैं

जीवित था और मनुष्य का दिल रखता था तब मैं जानता भी न था कि आंसू क्या होता है। आलीशान महल में रहता था, जहां सुख-ही-सुख था। दुख का कोई नाम भी न जानता था।

एक दिन, संसार के कोई दुख और अभाव देखे बिना मेरा अंत हो गया। अब जबकि मैं मर चुका हूं, लोगों ने मुझे ऊंचे खंभे पर खड़ा कर दिया है, जहाँ से मैं लोगों के सारे दुख-दर्द और बुराइयों को देख सकता हूं। उन्हें देखकर मेरी आंखों से बरबस आंसू निकल पड़ते हैं।"

"ओह, तो यह सुखी सम्राट की मूर्ति केवल सोने की नहीं है!" नन्हे अबाबील ने मन-ही-मन सोचा।

सुखी सम्राट की मूर्ति भारी गले से कहे जा रही थी, "दूर, बहुत दूर, तंग गली में एक टूटा-सा घर है, उसकी खिड़की खुली हुई है और वहां बैठी एक स्त्री मुझे दिखाई पड़ रही है। वह कपड़े सीती है, उसके चेहरे पर दुख और चिंता की घटाएं छाई हैं। राज-दरबार में नाच होनेवाला है। महारानी की सबसे प्यारी सखी के उस अवसर पर पहनने के कीमती कपड़ों पर वह स्त्री इस समय फूल काढ़ रही है। पास ही कोने में उसका इकलौता बच्चा तेज बुखार में पड़ा है। वह एक संतरे के लिए हठ कर रहा है।

मगर उसकी मां के पास उसे देने के लिए नदी के पानी के सिवा और कुछ नहीं है। बच्चा फफक-



स्त्री फूल काढ़ रही है और बच्चा······

फफककर रो रहा है। साथ ही अपनी बेबसी पर मां भी चुपचाप आंसू बहा रही है। क्यों भाई अबा-बील, क्या तुम मेरी तलवार की मूठ में से यह लाल निकालकर उसतक पहुंचा दोगे ?"

"यह कैसे होगा, सुखी सम्राट ?" नन्हे अबाबील ने कहा, "मिस्र में मेरे साथी मेरी राह देख रहे होंगे। वे नील नदी पर मंडरा रहे होंगे। मैं जल्दी ही उनसे

नहीं जा मिलूंगा तो वे शाही मकबरे पर सोने चले जायंगे ।"

"नन्हे अबाबील," सम्राट ने खुशामद से कहा, "क्या बस एक रात के लिए भी तुम और नहीं ठहर सकते ? जरा सोचो तो, वह बच्चा बहुत प्यासा है और उसकी मां बहुत दुखी है ।"

सम्राट के उदास चेहरे को देखकर अबाबील का दिल पिघल गया । बोला, "अच्छा, एक दिन के लिए ठहरा जाता हूं ।"

इतना कहकर नन्हे अबाबील ने सम्राट की तल-वार की मूंठ में से वह बड़ा चमचमाता लाल निकाल लिया और उसे चोंच में दबाये घरों की छतों पर से उड़ने लगा। वह गिरजे की मीनारों के ऊपर से उड़ा, जहां संगमरमर की देव-दूतों की मूर्तियां बनी हुई थीं । राजमहल के ऊपर से उड़ा और वहां नाच करतीं पाजेबों की रुनझुन उसने सुनीं ।

अबाबील नदी के ऊपर से गुजरा, फिर बाजार के ऊपर से, जहाँ लोग तरह-तरह की चीजों का मोल-तोल कर रहे थे । आखिर वह दर्जिन के घर पहुंचा । उसने खिड़की से भीतर झांककर देखा—बच्चा बुखार में बेसुध-सा पड़ा छटपटा रहा था । पास ही नीचे जमीन पर थकान से चूर उसकी मां पड़ी थी ।

नन्हा अबाबील झट अंदर गया, मां के हाथ के पास वह लाल रख दिया और अपने पंखों से बच्चे के माथे पर हवा करता हुआ उसके चारों ओर उड़ने लगा।

बच्चा नींद में बड़बड़ाया—"वाह, कैसा अच्छा है, कैसा अच्छा ! अब मैं जल्दी ही चंगा हो जाऊंगा।"

अबाबील सुखी सम्राट के पास पहुंचा और उसे सारा हाल कह सुनाया। फिर बोला, "कैसी अजीब बात है ! इतनी सर्दी पड़ रही है, फिर भी मैं अपने को गरम महसूस कर रहा हूं।"

सुखी सम्राट ने कहा, "इसमें अचरज की क्या बात है, नन्हे अबाबील ?" तुमने किसीका भला किया है ! यह उसीकी खुशी का फल है।"

नन्हा अबाबील खुशी के मारे फूला न समा रहा था। दिनभर वह नगर की नामी इमारतें देखता रहा और गिरजे की मीनार की चोटी पर काफी देरतक बैठा रहा। जहां-कहीं वह जाता, चिड़ियाँ चहचहाकर उसका स्वागत करतीं।

"ओह, यह परदेसी कितना खूबसूरत है।" वे आपस में कहतीं। नन्हा अबाबील झूम उठता।

और जब आकाश में चंदा उगा, नन्हा अबाबील उड़कर सुखी सम्राट के पास पहुंचा। बोला, "अच्छा,

प्यारे सम्राट, अब आज्ञा दो। आज मुझे मिस्र चले ही जाना चाहिए।"

"अबाबील, नन्हे अबाबील," सम्राट ने कहा, "क्या आज रातभर तुम और नहीं ठहर सकते ?"

"यह नहीं हो सकता," अबाबील ने उत्तर दिया। मिस्र में मेरी बड़ी प्रतीक्षा हो रही होगी। कल मेरे साथी उड़कर उस झरने पर चले जायंगे, जहां दरियाई घोड़े आराम करते हैं और उषाकाल के देवता आकर बैठते हैं।"

"नन्हे अबाबील," सम्राट ने कहा, "दूर, बहुत दूर, कमरे में बैठे एक नौजवान को मैं देख रहा हूं। उसके बाल घुंघराले और भूरे हैं। अनार के छिलकों जैसे मुरझाये उसके होंठ हैं। वह एक कागजों के ढेर पर झुका हुआ है, पास ही कांच के गिलास में कुम्हलाये फूलों का एक गुच्छा रखा है। इस समय वह एक नाटक लिखने की चिंता में है, पर ठंड के मारे उसके हाथ नहीं चल रहे हैं। उसकी अंगीठी कोयलों के बिना ठंडी पड़ी है और भूख के मारे उसके पेट में बेचैनी हो रही है।"

"अच्छा प्यारे सम्राट, आज रात और मैं तुम्हारे पास ठहर जाता हूं," अबाबील ने कहा, "क्या इस नौजवान के पास भी मुझे कोई लाल ले जाना

होगा ?"

"नहीं, नन्हे अबाबील, मेरे पास अब आंखों के सिवा कुछ नहीं बचा है। इनमें एक-एक कीमती हीरा जड़ा है। लो, एक निकाल लो और उस युवक को दे आओ। वह किसी जौहरी के हाथ उसे बेचकर ईंधन जुटा सकेगा और पेटभर खाना पा सकेगा। मुझे भरोसा है, फिर उसे अपना नाटक पूरा करने में अधिक समय नहीं लगेगा।"

नन्हे अबाबील की आंखों में आंसू छलछला आये। उसने कहा, "प्यारे सम्राट, ऐसा तो मैं मरकर भी न कर सकूंगा।"

सम्राट ने उसे समझाया, "अबाबील, नन्हे अबाबील, जैसा मैं कहूं, वैसा ही करो।"

तब अबाबील ने सम्राट की एक आंख निकाली और लेखक के घर की ओर उड़ चला। उसके कमरे की छत बहुत ही कमजोर हो गई थी। उसमें जगह-जगह छेद हो गये थे। इन्हींमें से होकर वह कमरे में पहुंच गया। युवक सिर को दोनों हाथों में थामे बैठा था। इसीसे उसने पंखों की फड़फड़ाहट नहीं सुनी। जब उसकी निगाह ऊपर उठी तो कुम्हलाये फूलों पर उसे एक हीरा पड़ा दीखा।

"ओह, तो आज लोगों ने मेरी कोमत आंक

ली !" वह खुशी से नाच उठा। "अवश्य यह किसी



अबाबील ने सम्राट की एक आंख निकाली।

धनी प्रशंसक की भेंट है। अब मैं जल्दी ही अपना नाटक लिख डालूंगा।"

अगले दिन अबाबील फिर सारे दिन इधर-उधर घूमता रहा और आकाश में चंदा निकलते ही सम्राट के पास आकर बोला, "प्यारे सम्राट, अब मैं अपने देश जा रहा हूं।"

"अबाबील, ओ नन्हे अबाबील," सम्राट ने कहा, "क्या आज की रात तुम और नहीं ठहर सकते ?"

"नहीं, अब मैं और अधिक नहीं ठहर सकता।" अबाबील ने उत्तर दिया, "शीत सिर पर है। शीघ्र ही यहां पाला और बरफ पड़ने लगेगा। उधर मेरे साथी बालबक के मंदिर में घोंसला बना चुके हैं। प्यारे सम्राट, अब तो मुझे जाना ही होगा। हां, मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकूंगा। अगले बसंत में मैं फिर इधर आऊंगा और तुम्हारे लिए दो अनमोल जवाहर लाऊंगा––एक लाल जो लाल गुलाब से भी सुर्ख होगा और एक नीलम जो महासागर जैसा नीला होगा।"

"यह तो ठीक है," सम्राट ने कहा, "मगर सोचो तो, प्यारे अबाबील, नीचे मैदान में एक दियासलाई बेचनेवाली छोटी-सी लड़की खड़ी है। उसकी सारी दियासलाइयां नाली में गिर पड़ी हैं। जितने की वे सब बिकतीं, अगर उतने दाम वह घर नहीं ले जायगी तो उसकी सौतेली मां उसे पीटेगी। इसी डर से बेचारी वहीं-की-वहीं खड़ी रो रही है। न तो उसके पैरों में जूते हैं, न सिरपर ओढ़नी है। नन्हे अबाबील, मेरी यह दूसरी आंख का नीलम भी निकाल लो और उसे दे आओ। बेचारी पिटने से बच जायगी।"

"जरूर सम्राट, मैं आज रात और तुम्हारे पास ठहरने को तैयार हूं," अबाबील ने कहा, "मगर

तुम्हारी दूसरी आंख मुझसे नहीं निकाली जायगी तब तो तुम अंधे ही हो जाओगे।"

"नहीं-नहीं, प्यारे अबाबील, तुम मेरी चिंता न करो।" सम्राट ने कहा। "मैं जो कहता हूं, सो करो।"

बेचारा अबाबील क्या करता! लाचार होकर उसने सम्राट की दूसरी आंख भी निकाल ली और उसे लेकर उड़ चला। वह लड़की के आगे से गुजरा और धीरे-से उसकी मुट्ठी में वह नीलम सरका दिया।

"वाह, कैसा अच्छा कंचा है!" लड़की खुशी से चिल्ला उठी। फिर रोना भूलकर घर की ओर चल दी।

नन्हा अबाबील सम्राट के पास लौट आया और भरे गले से बोला, "मेरे प्यारे सम्राट, तुम्हारी दोनों आंखें चली गईं। अब मैं सदा तुम्हारे पास ही रहूंगा।"

"नहीं-नहीं, नन्हे अबाबील। यहां अब बरफ पड़ेगी। तुम्हें आज ही मिस्र चले जाना चाहिए। तुम बहुत अच्छे हो। जाओ, चले जाओ।"

पर अबाबील नहीं माना।

अगले दिन वह सम्राट के कंधे पर बैठा हुआ मिस्र की अजीब-अजीब बातें सुनाता रहा। सबकुछ

सुनकर सम्राट ने कहा, "प्यारे अबाबील, तुमने मुझे बड़ी-बड़ी विचित्र बातें सुनाईं। लेकिन देखो, मनुष्य की पीड़ा से बढ़कर संसार में कोई अनोखी बात नहीं है। दुख से अधिक रहस्यमय और कुछ नहीं है। इसलिए प्यारे अबाबील, एक बार, सिर्फ एक बार, तुम इस सारे नगर के ऊपर से उड़ो और जो-जो देखो, वह मुझे आकर बताओ।"

उसी घड़ी नन्हा अबाबील ऊपर आकाश में उड़ने लगा। उसने देखा—अमीर लोग अपनी कोठियों में रंगरेलियां मना रहे हैं और भूखे भिखारी उनके दरवाजे पर हाथ पसारे खड़े हैं! वह संकरी और अंधेरी गलियों में से उड़ा, जहां छोटे-छोटे मासूम बच्चों को उसने रोटी के बिना तड़पते देखा। और देखा कि हलकी बूंदों में नदी के किनारे, पुल के नीचे, दो बच्चे एक-दूसरे से लिपटकर अपने को गरम करने का प्रयत्न कर रहे हैं, पर क्या गरमाई उन्हें मिल रही है?

अबाबील ने लौटकर सब हाल सुखी सम्राट को सुनाया। सम्राट ने आंखों की सूनी कोटरों से छटपटाहट के साथ चारों ओर देखा और कहा, "नन्हे अबाबील, मेरा सारा शरीर सोने के पत्तरों से मढ़ा है। तुम यह सब पत्तर उखाड़ लो और उन सब दुखियों

को बांट आओ।"

अबाबील ने ऐसा ही किया। एक-एक करके सोने के पत्तर उखड़ते रहे और ग़रीबों में बंटते रहे। सम्राट नग्न होता गया और बच्चों के मुरझाये मुखड़े खिलते रहे।

तभी बरफ गिरी। फिर पाला पड़ा। सड़कें बरफ से ढक गईं और नन्हा अबाबील ठंड से अकड़ने लगा। लेकिन सम्राट का साथ उसने फिर भी न छोड़ा। जहां जो मिल जाता, पेट भरने को चुग आता और पंख फड़-फड़ाकर अपने को गरम करने की कोशिश करता। मगर कबतक ? एक दिन उसने समझ लिया कि उसका अन्त समय निकट आ गया है। उसमें शक्ति नाम को भी नहीं रही। मगर फिर भी किसी तरह उड़कर वह सम्राट के कंधे पर जा बैठा और डूबती-सी आवाज में बोला, "अच्छा प्यारे सम्राट, विदा !"

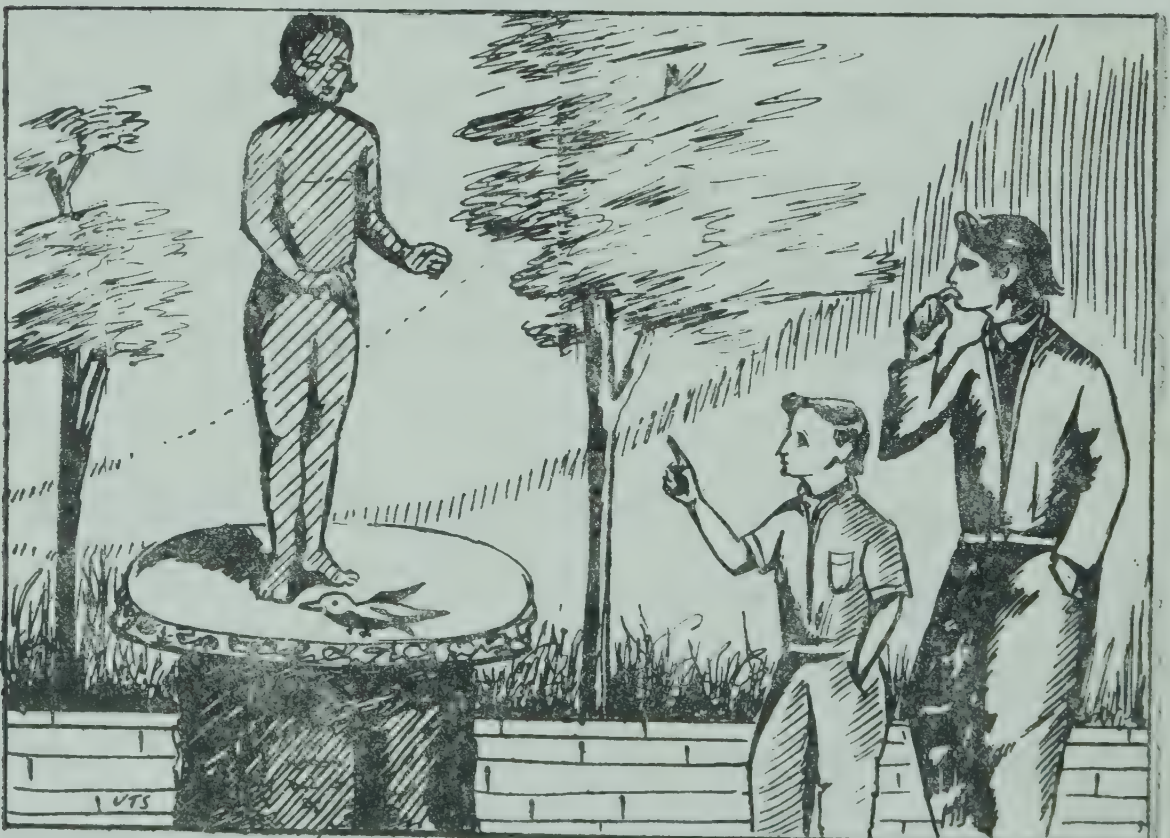
"हां-हां, जरूर, नन्हे अबाबील, जरूर। मुझे खुशी है कि तुम मिस्र जा रहे हो।"

"नहीं, मेरे प्यारे सम्राट, मैं मिस्र नहीं जा रहा हूं। मेरे लिए तो मौत का बुलावा आ गया है।" बात पूरी भी न हो पाई थी कि नन्हें अबाबील की बेजान देह सम्राट के पैरों पर आ गिरी।

अगले दिन सुबह जब नगर कमेटी का मुखिया दूसरे सदस्यों के साथ नगर का मुआइना करता हुआ उधर आया तो सिर उठाकर उसने मूर्ति की ओर देखा।

"अरे, सुखी सम्राट का यह क्या हाल हो गया है ? इसकी तलवार की मूठ का लाल कहां गया ? और दोनों आंखों के नीलम ? देह पर का सारा सोना भी गायब ! इसकी दशा तो किसी भिखारी से भी बदतर हो रही है।"

"जीहां, जीहां, ठीक कह रहे हैं आप।" हां-में-हां



अरे, सुखी सम्राट का क्या हाल हो गया !

मिलानेवाला साथी बोल उठा।

"और यह क्या? इसके पैरों में यह चिड़िया कैसी मरी पड़ी है?" मुखिया कहता गया, देखिये, जनाब हमें एक नोटिस निकालना चाहिए कि चिड़ियों को यहां मरने की इजाजत नहीं है।"

साथी ने तुरंत अपनी डायरी में यह नोट कर लिया।

अगले दिन सुखी सम्राट की मूर्ति को तुड़वा दिया गया। मनों धातु थी उसमें। गलाने के लिए भट्टी पर चढ़ा दी गई और उस धातु का क्या किया जाय, यह तय करने के लिए मुखिया ने कमेटी की बैठक बुलाई।

"हमें चाहिए कि इस धातु से कोई दूसरी मूर्ति तैयार करायें।" मुखिया ने कहा, "और मेरा प्रस्ताव यह है कि वह दूसरी मूर्ति मेरी हो।"

"नहीं, मेरी। नहीं, मेरी।" कमेटी का हर सदस्य चिल्लाया। सभा में 'तू-तू' 'मैं-मैं' होने लगी।

"कितनी अजीब बात है! "भट्टी के पास खड़ा ओवरसीयर धातु गलानेवालों से कह रहा था, "यह शीशे का टूटा हुआ दिल किसी तरह पिघल ही नहीं रहा है। मेरा ख्याल है कि इसे फेंक दिया जाय।"

और सचमुच कूड़े के ढेर पर उसे फेंक दिया गया—ठीक वहीं, जहां मरा हुआ नन्हा अबाबील पड़ा

हुआ था।

... ...

स्वर्ग में भगवान ने अपने एक दूत से कहा, "जाओ, धरती पर से मेरे लिए दो अनमोल वस्तुएं ले आओ।"

दूत आया और उस शीशे के टूटे दिल और मरे अबाबील को उठाकर ले गया।

भगवान देखते ही उछल पड़े। बोले, "तुम्हारा चुनाव बहुत ऊंचा है।"

: २ :

स्वार्थी दानव !

किसी बगीचे में एक दानव रहता था। उससे कुछ दूर पर एक पाठशाला थी। तीसरे पहर जैसे ही उसकी छुट्टी होती, बच्चे बगीचे में खेलने पहुंच जाते।

बगीचा काफी बड़ा और सुंदर था, उसकी हरी मुलायम घास बड़ी प्यारी लगती थी। घास पर इधर-उधर रंग-बिरंगे फूल सितारों की भांति जड़े थे। बाग में तरह-तरह के पेड़ थे, जिनमें वसंत ऋतु में गुलाबी मोती के समान फूल खिलते थे, पतझड़ में रसभरे फल। इन पेड़ों पर बैठकर चिड़ियां इतने मधुर स्वर में गाया करतीं कि बच्चों को उनका गीत सुनने के लिए अपना खेल तक बीच में रोक देना पड़ता था।

दानव अपने किसी मित्र से मिलने गया हुआ था और सात साल तक उसके ही यहां रहा। वापस लौटा तो देखता क्या है कि बच्चे उसके बगीचे पर अपना अधिकार जमाये हैं। उसे क्रोध आ गया।

"शैतानो, तुम यहां क्या कर रहे हो?" वह चिल्लाया। उसकी इस तेज आवाज को सुनकर बच्चे वहां नहीं टिके। एक-एक करके सब भाग गये।

"यह बाग मेरा है।" दानव कहता गया, "मैं यहां अपने अलावा किसी को भी नहीं खेलने दूंगा।"



दानव की आवाज को सुनकर बच्चे भाग गये

उसने बाग के चारों ओर ऊंची दीवार बनवा दी और सूचना टांग दी--"बिना आज्ञा के भीतर आनेवाले को कठोर दंड दिया जायगा।"

बेचारे बच्चों को खेलने के लिए अब कोई जगह न थी। एक बार उन्होंने सड़क पर खेलने की कोशिश की, लेकिन वह धूल और कंकड़ों से भरी थी और वहां चोट लगने का खतरा था।

छूट्टी होने पर वे बाग की ऊंची चहारदीवारी के इर्द-गिर्द चक्कर काटते और अंदर के सुंदर बगीचे के विषय में तरह-तरह की बातें किया करते।

तभी वसंत आया और सारा देश छोटी-छोटी चिड़ियों की चहचहाहट से गूंज उठा। चारों ओर नन्हें-नन्हें फूल खिल उठे। लेकिन दानव के बगीचे में अब भी हेमंत था। चिड़ियां वहां गाने नहीं आईं, क्योंकि अब वहां बच्चों की हंसी नहीं गूंजती थी, उनकी किलकारियां नहीं सुनाई पड़ती थीं। और तो और, पेड़ तक खिलना भूल गए। सारे बाग में जैसे मातम छा गया। यदि कभी भूल से कोई सुंदर फूल अपना सिर घास के बाहर निकालकर झांक भी लेता तो तुरंत उसकी निगाह सामने लगी सूचना पर पड़ जाती और वह बच्चों के वियोग से इतना दुखी हो उठता कि फिर धरती में अपना मुंह छिपा लेता। अगर बच्चों के न आने से बाग में कोई सुखी था, तो वे थे केवल बर्फ और पाला।

"वसन्त को अभी इस बगीचे का पता ही नहीं है," वे खुशी से चिल्लाये, "अब हमीं यहां पूरे साल रहेंगे।"

बरफ ने अपने बड़े सफेद लबादे से घास को ढक लिया और पाले ने सारे पेड़ों को चांदी से मंढ़ दिया। तब उन्होंने उत्तरी हवा को अपने साथ रहने को

बुलाया। वह झट आ गई।

"वाह...यह स्थान कितना सुंदर है!" वह चिल्लाकर बोली, "क्यों न भाई ओलों को भी यहीं बुला लिया जाय?"

ओले भी वहां पहुंच गये। हर दिन वे तीन घंटे लगातार किले की छत पर पड़ापड़ बरसते, तोड़-फोड़ करते और आखिर पूरी तेजी से चारों ओर दौड़ लगाते।

"मैं समझ नहीं पा रहा कि आखिर वसंत के आने में इतनी देर क्यों हो रही है?" एक दिन स्वार्थी दानव बोला, जैसे ही उसने खिड़की खोली और उसकी नजर अपने सफेद और ठंडे बगीचे की ओर गई। "ज़हांतक मैं समझता हूं, अब जल्दी ही ऋतु बदलेगी।" उसने सोचा।

लेकिन वसंत नहीं आया, न गर्मी आई। शरद् ने हर बाग को सुनहले फल दिये, पर दानव के बगीचे को खाली छोड़ दिया।

"वह बहुत स्वार्थी है!" शरद् ने कहा।

दानव के बगीचे में हमेशा हेमंत रहा। उत्तरी हवा, ओला, पाला और बर्फ का ही पेड़ों पर नाच होता रहा।

एक दिन सुबह दानव की आंख खुल गई, फिर भी वह बिस्तर पर लेटा रहा। अचानक उसे संगीत की बहुत मीठी और प्यारी आवाज सुनाई दी। वह उसके

कानों को इतनी मीठी लगी कि उसने सोचा, राजा के गवैये वहां से जा रहे हैं। सच बात यह थी कि उसकी खिड़की के बाहर एक छोटी चिड़िया गा रही थी। लेकिन दानव को गाना सुने मुद्दत हो गई थी, इसलिए उसे वह गाना बहुत प्यारा लगा। उसी घड़ी ओलों ने उसके सिर पर नृत्य करना बंद कर दिया। उत्तरी पवन का गर्जन रुक गया और खिड़की की दरार में से होकर भीनी-भीनी सुगंध भीतर आने लगी।

"वाह, आखिर वसंत आ ही गया!" दानव ने कहा और वह बिस्तरे से कूदकर बाहर झांकने लगा।

उसने क्या देखा?

बहुत ही अद्‌भुत दृश्य। दीवार के एक छोटे-से रास्ते से बच्चे अन्दर घुस आये थे और पेड़ों की शाखाओं पर अपना कब्जा जमाये हुए थे। कोई पेड़ ऐसा न बचा था, जिसपर कोई छोटा बच्चा न बैठा हो। बच्चों को फिर से अपने बीच में देख वृक्ष फूले नहीं समा रहे थे। वे बेहद खुश थे, इतने कि फूलों से लद गये थे और अपनी बाहें धीरे-धीरे बच्चों के सिरों पर लहरा रहे थे। चिड़ियां चहचहाती हुई इधर-से-उधर फुदक रही थीं और रंग-बिरंगे फूल हरी घास में से बाहर झांक-झांक कर मुस्करा रहे थे। बड़ा ही प्यारा दृश्य था वह।

लेकिन बाग के एक कोने में अब भी हेमंत था। यह बगीचे का सबसे दूर का कोना था और वहां एक छोटा लड़का खड़ा हुआ था। वह इतना छोटा था कि पेड़ की शाखाओं तक नहीं पहुंच सकता था, इसलिए रोता हुआ उसके चारों ओर घूम रहा था। बेचारा पेड़ अभी तक पाले और बरफ से ढका हुआ था, उत्तरी हवा उसपर गरज-गरज पड़ती थी।

"चढ़ आओ, बच्चे, ऊपर चढ़ आओ।" पेड़ ने कहा और अपनी शाखाएं जितनी नीची झुका सकता था,



"चढ़ आओ, बच्चे ऊपर चढ़ आओ" पेड़ ने कहा।

झुका दीं। पर लड़का बहुत ही छोटा था। यह देखकर दानव का दिल पसीज उठा।

"आजतक मैं कितना स्वार्थी था।" उसने कहा, "अब मेरी समझ में आया कि वसंत यहां क्यों नहीं आना चाहता था। अभी चलकर मैं उस छोटे बच्चे को पेड़ के ऊपर चढ़ाये देता हूं और चहार-दीवारी को गिराये देता हूं, जिससे मेरा बाग हमेशा के लिए बच्चों के खेलने का स्थान बन जाय।"

अबतक उसने जो किया, उसपर उसे बहुत पश्चात्ताप हो रहा था। वह आहिस्ते से नीचे उतरा और सामने का दरवाजा खोलकर बगीचे में आया, लेकिन जैसे ही बच्चों ने उसे देखा, वे इतने डर गये कि सब भाग खड़े हुए और बगीचे में फिर से हेमंत छा गया। केवल वह छोटा लड़का नहीं भागा, क्योंकि उसकी आंखें आंसुओं से इतनी डबडबाई हुई थीं कि उसने दानव को आते हुए नहीं देखा। दानव चुपके से उसके पीछे आया, बड़े धीरे से उसने उसे अपने हाथों में उठाया और पेड़ पर बिठा दिया। बिठाते ही दानव ने देखा कि वृक्ष फूलों से लद गया और चिड़ियां आ-आ कर उसपर चहचहाने लगीं। बच्चे ने खुश होकर अपनी दोनों बाहें दानव के गले में डाल दीं और उसे प्यार किया। दूसरे बच्चों ने जब देखा कि दानव अब

दुष्ट नहीं रहा है तो वे भी बगीचे में लौट आये। उनके साथ ही वसंत भी लौट आया।

"बच्चो, आज से यह बगीचा तुम्हारा है।" दानव ने कहा और फौरन एक फावड़ा लेकर उसने परकोटे को ढा दिया।

दोपहर को बारह बजे जब लोग बाजार जाते हुए उधर से गुजरे तो देखते क्या हैं कि दानव सबसे सुंदर बगीचे में उन बच्चों के साथ खेल रहा है।

दिनभर बच्चे बाग में खेलते रहे और ज्योंही शाम हुई, वे दानव के पास बिदा मांगने आये।

"लेकिन तुम्हारा छोटा साथी कहां है"—दानव ने पूछा, "वही, जिसे मैंने पेड़ पर बैठाया था ?"

दानव उसे बहुत अधिक प्यार करने लगा था।

"हमें नहीं मालूम।" बच्चों ने उत्तर दिया। "वह शायद चला गया।"

"तुम उससे जाकर कहना कि वह कल जरूर आये।" दानव ने कहा।

लेकिन बच्चों ने कहा, "हमें नहीं मालूम कि वह कहां रहता है और न आज से पहले हमने कभी उसे देखा ही है।"

यह सुनकर दानव बहुत दुखी हुआ।

हर रोज जैसे ही पाठशाला की छुट्टी होती, बच्चे जाते

ग्रौर दानव के बगीचे में खेला करते। परंतु वह छोटा बच्चा, जिसे दानव बहुत चाहता था, फिर कभी दिखाई नहीं दिया। यों तो दानव ग्रब सभी बच्चों के प्रति दयालु था, फिर भी वह ग्रपने उस छोटे मित्र को बहुत याद करता ग्रौर उसके बारे में पूछताछ किया करता।

कई साल गुजर गये। दानव बहुत बूढ़ा ग्रौर कमजोर हो गया। ग्रब तो खेलना भी उसके बस का न रहा। वह एक ग्रोर ग्रारामकुरसी पर बैठा बच्चों को खेलते हुए देखता रहता ग्रौर ग्रपने बाग की प्रशंसा किया करता।

"मेरे बगीचे में बहुत सुंदर-सुंदर फूल हैं।" वह कहता, "किंतु बच्चे उन सबसे सुंदर फूल हैं।"

एक दिन हेमंत ऋतु में बड़े तड़के कपड़े पहनते समय दानव की निगाह खिड़की के बाहर पड़ी। ग्रब वह हेमंत से घृणा नहीं करता था, क्योंकि वह जानता था कि हेमंत सोया हुग्रा वसंत है ग्रौर उसमें फूल ग्राराम करते हैं।

सहसा वह चौंक पड़ा ग्रौर ग्रांखें मलकर देखने लगा। बगीचे से दूर, बहुत दूर, एक कोने में एक वृक्ष सुंदर सफेद फूलों से लदा हुग्रा था। शाखाएं उसकी सुनहली थीं ग्रौर उनपर चांदी के फूल लटक रहे थे। सबसे ग्रधिक ग्राश्चर्य की बात यह थी कि उस वृक्ष के नीचे वही बच्चा, जिसे वह दानव प्यार करता था, खड़ा

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1
1625

हुआ था।

खुशी के मारे दानव झट नीचे उतरा और बगीचे में आया, फिर तेजी से घास के कालीन को पारकर वह बच्चे के पास जा पहुंचा। जब वह उसके बिल्कुल निकट गया तो सहसा उसका मुंह क्रोध से लाल पड़ गया।

"कौन है जिसने तुम्हें मारने की जुर्रत की है?" उसने पूछा। बच्चे की हथेलियों पर नाखूनों के दो निशान थे और उसके वैसे ही पैरों पर।

"बोलो, किसने तुम्हें घायल किया है?" दानव चिल्लाया, "मैं अपनी तलवार से उसका सिर धड़ से अलग कर दूंगा।"

"नहीं-नहीं," बच्चा बोला, "ये तो प्रेम के घाव हैं।"

"तुम कौन हो?" दानव ने पूछा, और किसी अनजाने डर से कांपकर वह बच्चे के सामने घुटने टेक कर बैठ गया।

बच्चे ने मुस्कराकर कहा, "तुमने एक बार मुझे अपने बगीचे में खेलने दिया था। आज तुम मेरे साथ मेरे बगीचे में चलो, जिसे स्वर्ग कहते हैं।"

उस दिन तीसरे पहर जब बच्चे बाग में आये तो उन्होंने देखा कि वृक्ष के नीचे दानव मरा पड़ा है और उसका शरीर सफेद फूलों से ढका हुआ है।

ಸರ್ವೋದಯ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ಬ)
ವರ್ಗ ಕಮ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9676
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ौसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. आनबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश को अपने चलेंगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक का ३७ न० पै०

९०

मूल्य
सैंतीस नये पैसे